

पद १२

(राग: यमन - ताल: भजनी)

प्रभु आले आले मम सदनी। नयन दिपले मूर्ति पाहुनी॥ध्रु०॥
मध्यरात्रिची वेळ साधुनी। शांत सुनिर्मळ वातावरणी। प्रभु सह
मधुमति देवी पाहुनी। हर्ष न मावे गगनी॥१॥ मस्तकी हिरवा
फेटा बांधुनी। लाल मखमली झुबा घालुनी। नागपुरकाठी धूत
नेसुनी। हाती गुलाब घेउनी॥२॥ हिरवा पितांबर दिसे शोभुनी।
मळवट कुंकू काजळ नयनी। सर्वाभरणें भूषित होउनी। हाती
कमल घेउनी॥३॥ प्रथम भेटीचि धूळ घेउनी। आरति केली कीर्ति
गाउनी। देव वर्षिती सुमन हर्षुनी। जाय त्रिवेणी पाय धुवुनी॥४॥
राजोपचारे पूजा घेउनी। वरदहस्त या मस्तकी ठेउनी। पूर्ण झाली
ना इच्छा म्हणुनी। अदृष्य झाले तत्क्षणी॥५॥ पहा प्रभूची अगाध
करणी। भक्त प्रार्थिता येतो धावुनी। भक्तकार्याची साद घालुनी।
सिद्ध सह चला भजनी॥६॥